



ASHA ARCHIVES

2825

संपूर्ण चक्र संख्या

आशा भद्र काशी

2825

SHA ARCHIVES

सुच
ना

ॐ नमः श्रीवक्त्रसुचनाय
जसकगुनवचनलकम
नाचनमः ॐ ॥ ॥ वरु
यतिभयंभकगुनयत्यसाः
श्रीमन्वजजकायजकि



॥ ३ ॥ ॐ श्रीः ॐ श्रीमह
नायसंम्यज्ञावरासनं
रुकादिसमग्रं सकात्रयं
दनममायंज्ञानसकृदं
त्रियवकवरुन ॥ यं वः

सुनंठिकानायशायजगताममाः ॥ वावकावजजकि नवठि प्रसकलव
॥ लाकारुयवर्हन्सावनिता नमः सदा ॥ ॥ ॐ स्वरावशुका सर्वधर्माणां
स्वरावशुकाहं सूर्यगोम्यानवजस्वरावात्मकाहं ॥ मटिस्वाकात्रनयनानावशुन
श्रीकावमकयग्यानं हं कालं हं वज्रिगं ॥ नृकावलयना सार्थककावन्नकविता ॥
सर्वसुखधनहं हं ॥ मुकवर्हं हिरुजसुखं मानगानं तावयन् ॥ नदनृकवच

सम
आ

[illegible]

ॐ वं नमो भगवते ॥

[illegible]

सं

॥ कौं कावनयमराजने मां कावनमामकिरु झादिरु जावजवज हसु हूँ कावलाः
कात्याकृष्णद्वि तु जं वजवज हसुं कथाः संपट्याग्नममहाग्राग्नद्वि तु गं यम
न॥ पुनः हः साः कौंः अः गे स्वाहा हूँ ॥ उं सर्वरु कामिनि सर्वरु रुखधनि
येवजीनिकारधनि सर्वडययायिनि स्वधय स्वधय हूँ ॥ उं अमृक अमृकं यव
सय हूँ ॥ उं हकाव रुवत वधु हाकाव वधना गनं कौं कावनदीय हसु वज

कावन अमृक नयय गुरु ॥ ॥ उं वज रुम हूँ ॥ ये जां उं आं गं वां दं मां किं कौं नं कौं
कीं थं गं थं सैं सैं मं कैं वैं ॥ उं यी ॥ ययी ० रु आय रु रु रु आय रु रु मलाय का मलाः
समसा नाय सामान ॥ न ना अंग न्या ग ॥ उं ह ० नमः कौं ० स्वाहा ॥ हूँ वायट द ह हूँ
हा ० रुट रुट हूँ ॥ उं व हूं यो कौं मां कैं कौं हूँ हूँ रुट रुट ॥ उं ह नम न रु हूँ ॥ उं यागम
न रु हूँ ॥ उं आत्मानमन रु हूँ ॥ ॥ न न ० ख ह दये अका नदी च उम ह लाय निः

सं

कृष्णं कृष्णं ॥ कृष्णं कृष्णं ॥ कृष्णं कृष्णं ॥

॥ ॐ अलिकालियकि कृष्णः

युक्तनक कृष्णवर्धमयार्थ ॥ नदकृष्णयनिमनकृष्णयमवजवागिभुक्ति कृष्णान् ॥ नयस्कं
धवेवावनावदनास्कं धवेजसूर्य ॥ सस्रनस्कं धयमनयखलं सस्कावस्कं धवेज
नाजं विस्मनस्कं धवेजसुखं सर्वगतगकसुग्रीहनकवर्ज ॥ वरुणामाहवजीखनः
यादववजीधानयानीयावजीवकयागवजीयसामासूर्यवर्जः सर्वगतनष्टि च

४

यवजी ॥ यथीवीधरुयानिआयप्रातुमावीधीनजाधातुवाकवनीवायुधातुयम
नयधनआकासधातुयमकाविधी ॥ यत्रना ॥ अलिकालियकि मध्यलंकालयः
सूर्यमधुलंकनमध्यहंकालयलिधामरुगवर्कं कृष्णवर्धय कृष्णं यथमकुजाः
सावजयधंधंधिनीयासांवरुनर्जनीयागधधैरुनियासां उमरुवसांगधनः
वउमरुवसांमैवकंपीनंकाकासाकृष्णउरुकाग्याग्यामाखानाग्यानकागुक्

सं

लाग्वायीनायमजानिहृषीकायमइतीयो नत्रकायमइती नत्रकायमायममर्थनीग्वा
मरुष्वा॥ॐ सुस्नी सुस्नी हूं हूं ॥ॐ गुरु २ हूं हूं ॥ॐ गुरु कायय २ हूं हूं ॥ॐ आ
नयहारगवनविद्याना अथ हूं हूं ॥ॐ गुरु आरभं कावनसूर्यमधुलां नमध्व हूं का
लेधविश्ववज्रं हूं कालाधिष्ठितं ॥ॐ देविनाय वरु लपुमानं वज्रकलिका नृपेश्वराम
ने वज्रमथेरु मिं विहाय ॥ॐ मदनीवजीरु वं वज्रवं वं ॥ॐ वज्रपाका नृपेश्वरं ॥ॐ

जं

वज्रयं जल हूं व हूं ॥ॐ वज्रविमान हूं व हूं ॥ॐ वज्रसमजाय ग्रां स ग्रां ॥ॐ वज्र कावान
नाक हूं ॥ॐ कालजातदिग्वाकालसमिक्थनिबिगितान ॥ॐ आदिविद्यान रुदयकील
यन ॥ॐ यय २ यानय २ सर्वइशान हूं हूं ॥ॐ कीलय २ सर्वपायान हूं हूं ॥ॐ वज्रकील
यवज्रधना आस्ययनि सर्वविद्यविनायका नां काय वाक् विरु वज्रान कीलय हूं हूं
हूं ॥ॐ वज्रमूलवज्रकीलय आकाटयमाकाटय हूं हूं ॥ॐ नितिनिविप्रनृत्ता

सं

[illegible][illegible]

सं

दवायहं हं हं हं ॥ ॥ ॐ निकायय ॥ ॥ ॐ काका ग्य हं हं हं ॥ ॐ उय
काग्यहं हं हं हं ॥ ॐ खाना ग्य हं हं हं ॥ ॐ पु क ना ग्य हं हं हं ॥ ॐ यम न गिय हं
हं हं ॥ ॐ यम इ नी य हं हं हं ॥ ॐ यम क ली य हं हं हं ॥ ॐ यम म र्थ नी य हं
हं हं ॥ ६ ॥ इ ज न क न ॥ ॥ ॐ व र्ध ग ह य स्या हा ॥ ॐ ग क ना य स्या हा ॥
ॐ कालो क ला य स्या हा ॥ ॐ क लं क रं वा य स्या हा ॥ ॐ उ रु ट हा म य स्या हा ॥ ॐ ल की व

वन हं का स ना य स्या हा ॥ ॐ धालां व का ना य स्या हा ॥ ॐ किलि र लाल वा य स्या हा ॥ ६ ॥
ॐ नि सम मन ॥ ॥ य च य हा न य ज ॥ ला ग्या ॥ ॥ ॐ व ज वि न हं ॥ ॐ व ज वं न शं
॥ ॐ व ज न दं ग जी ॥ ॐ व ज म नू ज ॥ ॥ ॐ व ज ना ग्य हं ॥ ॐ व धै ज मा न शं ॥
ॐ व ज गी न जी ॥ ॐ व ज न र्ग ॥ ॐ व ज य ध हं ॥ ॐ व ज धू य ॥ ॐ व ज व ला कि न जी
ॐ व ज ग र्ग ॥ ॐ व ज द र्ग न हं ॥ ॐ व ग व ज जी ॥ ॐ स र्ग व ज जी ॥ ॐ ध र्म धा रु व ज ॥

सं

॥ धृष्ट वादनमुनि ॥ सर्वरूपसंज्ञाहं जगदर्थप्रसादकं विकामनिग्रथारुहं
श्रीसम्बन्धनमस्तुते ॥ व्यापविश्वमहासुनं सर्वमनिसदास्मिन् ॥ कृपाकाधमहाबोद्धुं
सम्बन्धनमस्तुते ॥ ॥ मन्त्रनर्त्ये ॥ ॐ नमो गवतं वीनवीलसुवायहूं हूं रुट् ॥ ॐ
नमो गवतं महाकल्याणिसनिरायहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो जयमहं यत्कटहं ववायेहूं हूं
रुट् ॥ ॐ नमो उज्ज्वलवागुतीषधमन्वायहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो सुरमुकुजराधवायहूं हूं

सं

रुट् ॥ ॐ नमो यनमुयासायनं गुलनखोगवागिरिहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो व्याघ्रवर्माविवधवा
यहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो महाधर्माधकात्रायवपूषायहूं हूं रुट् ॥ नमो वामहस्तकनमध्व
नकयच्छदनकमनेष्वावा ॥ ॥ ॐ वज्रवानाहीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ होयों यामिनीय
हूं हूं रुट् ॥ ॐ जीमोमाहिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ जीमोसंवागिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं हूं संज्ञा
सिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ रुट् श्वविकायहूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं वज्रसत्वायसाहा ॥ ॐ नमो हि

सं

वेमावनायसाहा॥ॐ स्वाहा॥ हूं यन्नरसुखाय हूं स्वाहा॥ॐ वाषट् दहन्नरसं
वायसाहा॥ॐ हूं हूं हावजसूर्यसाहा॥ॐ रुद्रपद्माश्वत्थायसाहा॥ कवमुचि
मधसुययित्वा॥ ॥यक्षयहाप्रयुजामुनिकृत्वा॥ ॥यामीन्यामवन्माः
हिनीरुगवतिसंवातिनीसर्वदामुक्तानिन्यसुधात्रासुविनायारगध्वनीवृत्तीकाः
वलावाउउकसा नमस्वीलीनाभीगारगोविदीसामाधूमसनायगुहगंवन्द

स्वदकायुवं॥ ॥उत्पादरुंगवहिनावनदहधात्रिकयुहाविजयिनीयः
विधीउन्नीवजांगधायुधगलेः समलकतांगीमखययामिगनतंजननीजिना
नां॥ ॥ॐ नमोऽरुगवतिवज्रवाहाही हूं हूं रुद्र॥ॐ नमोऽरुगवतिज्जिगज्य
नाजिगज्जवाकमाकनहूं हूं रुद्र॥ॐ नमः सर्वरुतेरुयावहहूं हूं रुद्र॥ॐ नमो
वजासनज्जिगज्जयनाजिगवग्यंकनिमदहाविनी हूं हूं रुद्र॥ॐ नमोऽरुगव

सं

दीक्षाधनिकवात्रिनीहैंहैंरुद्र॥उंनमासुद्रासनीमात्रनीसुपुहदिनीयत्राऊयहैं
 हैंरुद्र॥उंनमाऊयविऊयऊरुहिरुहिरुमाहनीयहैंहैंरुद्र॥उंनमावजासवी
 वऊवात्राहीवऊयामीनीनिकामयनीरुद्रगहैंहैंरुद्र॥ ॥अस्ययदमऊ
 विगमाऊनयदधिऊयाऊ॥ ॥नमायायदमनांरुद्रकात्रिकमनमादितः
 मयमविननिहिरुद्रायानांयमिदममैयोयननःयननयनंसम्वनविद

११

आवकवमैजिनारुमठजिनसुंमुंउगानिकगलानिअनमादितानिबोरधोसम्य
 कयत्रिधामयामिवजिनवलानीनद्रिकुयंमनयंयाऊमासि सर्वरावनवारधोवि
 मुंअनरुद्रमारुनथासवनि॥ ॥आदियाग॥ ॥नमोमेगीकनधः
 मदिनायकामीवउवुमविहानाविहावयन॥उंस्वरावगुद्रासर्वधर्मास्व
 रावगुद्राहंशुनीमाह्ननवऊस्वरावसकाहं॥ ॥विहमाउउवेनिस

स

न वाचि संहा त्रय प्रधा न्॥ न ता य वि धा न व सा न्॥ शुं च ना वि वृ ष्ट ४ यं काल न वा य
म धु ग न्ध रं नी लं व जं कृ तं ॥ न इ य त्रि वं का त्र ध म्भ मि म धु वं त्रि का धं त्र कृ त्र रं कृ
तं ॥ न इ त त्रि वं का त्र न व र न म धु लं व उ त्र स स्र न य ना कृ तं ॥ न इ य त्रि लं का त्र
ध य धि वि म धु लं व उ त्र सं यि त का र ध य त्रि धि कं व जं कृ तं ॥ न इ य त्रि सं का त्र
ध स्र म त्र म धु लं व उ त्र सु व उ त्र त्र म यं म्भ म्भ व य र्ना हि तं ॥ न इ य त्रि उ

१२

का त्र ध कृ त्र ग नं व उ त्र सु व उ त्र व र्ना हि तं ह्वा ना र्द्ध ह्वा न व कृ लि क क
र्मा गी य त्र य र्थ नं ॥ न इ य त्रि यं कौ व न वि ध य म्भ ॥ न न्म र ध रं का त्र ध वि स्र
व र्जं ॥ न न्म र ध यं का त्र ध कृ द न वि स्र य म्भ ॥ न इ य त्रि आ लि का लि द्वि गुर ध व उ त्र म धु
लं स्र य म धु लं न थ म र ध आ का स र्द्ध का त्र धै र ल न सं र्द्ध धा त्र कं ॥ न स र्व य त्रि न
मा न्म र ध य म धु लं सं गी व क स न्ध नं र ग व नं मा त्मा न रा व य न् ॥ न य मा त्मा नं व उ

ॐ

[illegible]

己

कलीत्रकपूर्वकपात्रधलंपंचमउजइयधयनयुवाभधनेषहमउजइयधः
 क्रिष्णावृक्षमित्राधनं।सद्ययच्छभगनत्रमित्रामात्राधमिर्षयाद्यवर्मनिवाभनः
 शृङ्गावरीरुसहास्यत्रोदरयानकंकनूष्मरुगंभानिनवनाथसमांविगं।चकिक्व
 लकधिनात्रककयत्रनोत्रमित्रामनिजुक्षयुवीगुंरुभवतिःखद्यमूडामडिनां॥
 नविमधुलंवामदक्षिणारगयतिरुलवकालिवाप्रिवामकर्धुननरुगलथात्राः

सं

लिद्यसतसंरु गवनें श्रीवकुसुमनं मात्मानं रावयतु ॥ रागवत वज्रवाजा ही वकः
वर्षमकटकं भागिननादिगंधवायवतु मष्टिगाकर्हिभगवतां दिउजां वाम उज्ज्वल
पूर्वकयात्रधनं ॥ दक्षिन उज्ज्वल इष्टगर्जनी वज्रकर्हिधनं यक्षमडा विरुषिगंधवः
इधिनाननां जघाद यनरुगवतसमागुक्तानां गयनिः ॥ उगाह रागवतिरावयत
॥ ॥ नगापूर्वादि द्वात्रयं जकिनीला माखधुना हनूयी नी कृष्ण मन्त्रकयोने

१४

४॥ ॥ चकवकुच उज्ज्वल ४ वामकयात्रवलांगंदक्षिरथ उमन्त्रकर्हिका उ
डाकलालवदनागिननामकटकं भायं च मडा विरुषिगा ४ आलिद्यसतसिगा ४ विदिग्ध
लषू ॥ वाधिविरुमृग राधुकायालानि ॥ गदहियुथमविरुचर्क अशालं नीलं वजाव
लिविरुषिगं ॥ पूर्वस्य द्वात्रयलिलमलयवधुकयालिनं यचधुं ॥ उरुज्ज्वलं धनः
महाकैकात्रवधुमहि ॥ यश्चिमआक्रियात्रकैकात्रयगामति ॥ दक्षिरथ अं वदः

सं

विकट छिन्नमहासी ॥ आ (अ) रा (ग) ज (व) र्था (स) ना (व) नी (नं) वी (न) म (नी) ॥ नेम (स) य (न) म (स) य (न)
अ (मि) ना (हं) र्वा (व) ली (वा) य (व) द (वी) का (ट) व (ज) र्हं (लं) कं (ध) वी (॥ ॐ) ग (न) य (मा) न (व) व (ज) द (ह) र्म
य (यां) ॥ ॥ ॐ नि (वि) र्हं च (क) ॥ ॥ दि (नि) य (वा) क (च) क ॥ अ (सं) नं (न) कं (न) क
य (भा) य (नि) स (मा) द (नं) ॥ न (स्य) य (व) द (वा) न (का) म (य) अं (क) ली (कं) न (वा) व (नि) ॥ उ (रु) ना (व) ज (ज) टि
लं (म) हा (हं) व (वी) ॥ य (श्चि) म (शि) ग (क) नो (म) हा (हं) ल (वं) वा (य) य (गं) ॥ द (क्षि) र्ध (का) र्ध (ग) ना (यां) :

१ॐ

वज्रहं का (न) स (ना) र्ह (क) यी ॥ अ (स्य) यां (क) लिं (ग) स (रु) ड (ॐ) मा (द) वी ॥ नेम (सं) लं (या) क (व) ज (प) र
स (रु) डं ॥ वा (य) यां (वी) य (न) म (हा) र्हं (व) र्ध (ह) य (क) र्ध ॥ ॐ ग (हि) मा (य) वि (न्या) द (व) ग (न) नां ॥
ॐ नि (वा) क (च) क ॥ ॥ रु (नि) य (का) य (च) क ॥ ॥ अ (स्य) नं (गु) कं (गु) कं (च) का (व) लि (अ)
लं (क) नं ॥ न (स्य) य (व) द (वा) न (य) न (स्य) म (हा) व (नं) च (क) व (ग) ॥ उं (रु) न (गु) य (द) व (ना) या (न) ल (व) ज (य) व (धु)
ना (हं) ॥ य (श्चि) म (मो) ना (श्च) ह (य) गी (वं) सो (धु) ली ॥ द (क्षि) र्ध (सु) व (र्धु) दी (यः) आ (का) म (ग) र्हं च (क) व (मि)

से

वि॥ अष्टायां नगव श्री हृद्रुके मूलीनां॥ नेमशां सिद्धो यमनृत्तुश्च नमस्तव नो॥ वा
य्यां मन्त्रो वेना वनं वक्रवर्हिणी॥ ॐ भूभ्या कुरु दवनायां वक्रसमहावीर्या॥ ३
ॐ निकायवर्कं॥ ॥ स्वधुकया ला दया वीला चकवक्रा चतुर्जुजा विनशा कटम
कृष्टिनां॥ अलिंगन उज दयव सवज वक्रयक्ष दीनीय उज दयन वामयत्वांगः
दक्षिण उम नृके यक्ष मूलादिगुणा आनि दसना स्तिना ४॥ एवञ्च दया चकवक्रा

१३

दि उजा अलिंगन कया लहसा दक्षिण वज कलिका विनशा नोदवृणीय ४ मूक कसा
अक्षयथाग समायना ४ दिगं वना ४ यं वमूला वि उषिना ॥ पूर्वदि दानका का भू कृष्णाः
उवका भू भू माखाना भू नृक गुक्रा भू पीना ॥ अष्टाया दि प्रयम दानि कृष्णीना
यम इति पीन न कयम इति न क भू मायम मर्थनी भू म कृष्णा ॥ ५ ना ४ यणी न्य ४ न
कवक्रा चतुर्जुजा वाम कया लहसा दक्षिण उम नृकार्क का प्रयाली दभवास

सं

नानिवसनायं च मूढा मूढिना कया लवजा वलिवि श्रुतिना विनया सक कं
सा नोड नयी ना लुति ॥ न ना काय वा किर्तु रदन पुष्ट कना विवि श्रुति न ॥ स्वर्ग
मत्य प्रया ना ने च क मूर्ति रुव कथा न ॥ उँ आ ४ हँ सर्व वी न या गी नी काय वा क वि
रुव ऊ स्या वा स का हँ ॥ ॥ य व र्ण अंग ना स ॥ ॥ उँ ह ० न म ० जी सा
हा हँ वा य ट् द ह हँ हँ हँ हँ हँ ॥ उँ वँ हँ याँ जीँ माँ जँ जीँ हँ हँ हँ हँ हँ ॥ उँ या ग

१०

भुक्ति सर्व धर्मा या ग शुद्धा हँ ॥ न न ४ समा नि न हून न च कं आ का स द स ट् द स ॥ उँ ४ हँ वँ हँ
४ ॥ आत्मान म धु ल्प ना कृ षा नि धाय ॥ उँ व ऊ शुद्धा सर्व धर्मा व ऊ शुद्धा हँ ॥ न ना अ
रिष क ॥ अरिषि च्छु माँ ॥ उँ सर्व वी न या गी नी य था दि जा न मा उ द स ना पी ना सर्व न था
गत सु हे था स ना प यि षा मि शु चं दि य न वा नि नां ॥ उँ आ हँ सर्व न था ग न अरिष क स
म श्र ये हँ ॥ म कृ ट् ॥ अरिष कं महा व ऊ उँ ध उँ क न म हू न ॥ य षा कं य ऊ ना र्थ य म

सं

कृत्यं च कृत्यं हवं ॥ उँ वज्रधनसुनी अतिविचरुँ ॥ उँ वज्रवजी निअतिविचरुँ ॥
उँ वज्रवजी निअतिविचरुँ ॥ उँ धर्मवजि निअतिविचरुँ ॥ उँ कर्मवजि निअति
वज्र ॥ अथातिविचरुँ मसि वज्र वजातिवकन ॥ ८॥ दं न सर्ववज्र वज्र वज्र
ससिद्धय ॥ वजाधियनिस्वामिनि विंतामि ॥ नि वज्र सम यत्नं हा ॥ ८॥ वज्रधन
अ ॥ ८॥ वज्रधन मतिविंतामि ॥ वज्रधन मतिविंतामि ॥ ८॥ धी वज्र वज्र सत्त्वना

१८

मनधनगगनुवसे ॥ ॥ पूर्ववत् आर्षणयाया विषयं न्याम ॥ ८॥ यथायथा
नपूजाया ॥ अथवादनमुनि ॥ ॥ धी वज्र सम यत्नं हा ॥ ८॥ वज्रधन
लसनीयवलगमाधिना ॥ ८॥ कालाननालतिनवा ॥ ८॥ वज्रधन
मिनवाधियमं ॥ ८॥ मनुनयन ॥ ८॥ धी वज्र सम यत्नं हा ॥ ८॥ वज्रधन
नता अलिकालिपकि ८॥ यथायथा ८॥ वज्रधन ८॥ वज्रधन ८॥ वज्रधन ८॥

सं

॥ अथ जगत्त्रिविक्रुतस्य अनादि संसिद्धिश्चैव कस्य च वीजवद्विषयसमवसिद्धिर्गोचरा
नासायुगनयविभक्ताद्योपनिविष्टतस्याकाशं च त्रिमयुलीरुता विविच्य ॥ न कश्चित्पु
कुरुं कालवदुवीजयविद्यमंसहजसम्यग्भुक्त्वि उक्तं कस्य च वीजवद्विषयसमवसिद्धिर्गोचरा ॥
आलीक्ष्य सनसं आकाशविर्लसदसं वीजकया न धात्री हि उक्तं कस्य च वीजवद्विषयसमवसिद्धिर्गोचरा
ही समायत्र विहाय ॥ तन्नामायासूत्रमध्वनि समाकृत्यैव कासकं वीजकमनस

१३

वयम् ॥ जगत्त्रिविक्रुतस्य अनादि संसिद्धिश्चैव कस्य च वीजवद्विषयसमवसिद्धिर्गोचरा
दयः ॥ कायविक्रुतं कायविक्रुतं वाक्त्रिक्रुतं विर्लविक्रुतं विर्लविक्रुतं महासूत्रविक्रुतं महासूत्रविक्रुतं
संतागविक्रुतं संतागविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं त्रिविक्रुतं
हावागदवायत्र ननु वयमिदं न सिद्धिना न कस्य कादृशं संहं का वं महासूत्रमय
तावयम् ॥ ननु ॥ उक्ता वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं वीजकं

सं

विद्याविन्दनादनादंवागुंसकसहस्रलगाव्यंनिविकल्पंमहासखमयीविरुनित्रययन्।
यनःसत्यार्थमतीतिमधुलंमधिमय॥ ॥युर्वक्तृशकषधायुष्यंन्यासयक्कायहा
त्रयजादिलाभ्याद्यध्वावादनमुनितर्क्यद॥१००॥निगुक्तयाग४॥ ॥नतामनुजाय
युर्वक्तृशकषधायुष्यंन्यासयक्कायहात्रयजालाभ्याद्यध्वावादनमुनितर्क्यन॥१००॥निजाय
जाग॥ ॥नतावल्लिमालरयंयकात्रधवायूमधुलायत्रिंजाताश्रुतिमधु

२०

लंश्रुजनिःमधुरुययत्रिकायमरुक्तंविदित्य॥नरुक्तकादियत्रियत्रिंःवैः
श्रुंजीवैरुंलांमांयांतांवंकात्रजागयक्कायमयक्कायदियत्रयनमीथाद्य॥यवनम
धुलवत्रयत्रितकालिताश्रितायत्रिंलीनमानाकनादिकंश्रुतिनवधूतानूडवत्र
यंदृष्टा॥नश्यत्रिंकात्रानितवितस्मिमाकानलितारक्षामुखाभनमयशुक्रव
द्यार्थनद्यायीनीधंयात्रमदृष्टमभिप्रयंसीगीरुंविदित्य॥नश्यत्रिःॐश्रु४

न त वा हा न या श्री व ज्ञा वा र्थ वा ध नं लि वा यि ॥ ॥ दा न य ति ऊ ज्मा न न या न
म द न स्त व न य ना नि म हा न ग न न ह म धु न मा हा य हा न सा नि य न स्था नः व स धि न
सा क रि कूः व द दि न सि या न ध य क क वा स्यं वि या श ल भु र ॥ ॥ ल य क दा व
ना सिः शु धं वा शु धं वा म म दा व ना सिः शु रं रू या न् ॥ मं ग नं र वं तु स र्व दा का म
शु रं ॥

५३

श्री
आर्जु

ॐ नमः शिवाय क ऊटि आ
रुद्रक व म् ॥ नाना धनु
ता की र्ध्व ॥ नाना यं कि नि
का रे ॥ नाना मृ ग समा क
समन्ता दधि वा सि तं ॥ ना



यं ता प्रा ये ॥ ॥ श्री मन्त्रा
विद्या जि तं ॥ नाना क मल
कूर्जि तं ॥ नाना निर्म मं
ल ॥ नाना क सू म जा कि ति
ना रु द्य रु ला य तः स्व द

२५

ना ना

यदा गिर नि स्व रे ॥ कि न्न वे र्म धू वा जी र्मे म रु वा द व सं क ले ॥ सिद्धि विद्या ध व ग ले
गन्धर्व श्व नि ना दि ने ॥ म नि ति व न ना र गे श्वः म न तं स स नि स वि त् ॥ वा धि स त्व ग ले
श्रान्ते द म रु मि ध वे र्म यि ॥ आ र्य ना वा दि ति र्द ये विद्या वा ऊ स रु सु क ॥ का ट ना ऊ
ग ले श्रान्तेः रु द्य शी वा दि ति र्द न ॥ सर्व स त्व दि ता य काः रु ग वा न् व ला कि त ॥
वि ऊ रु द्य न न ॥ श्री मा न् य म ग रु स न सि त ॥ म रु ना न य सो य काः मे त्याः

आर्य

श्री

मानिः सत्यानन्तामहं सदा ॥ तावयिष्यामहं सत्याः नानाहयमहान्वा नाना नन ताव
निमांलाकः गायंति मन्त्रियंगवा ॥ कृताञ्जलियथाहृत्वाः नन सादवसाः सात ॥
कलंतिक नत्रिकृष्टाः ॐ देववनमववीरु ॥ नामाष्टम नकं उहीयहृत्वा कीर्तिर
ऊने ॥ दमरुमिस्वने नाथे वाचि सत्वेर्महर्द्धिके ॥ सर्वयाय हनंयध्वः मार्ग
लं कीर्तिवर्द्धिः धनधान्यकनंवेवः आयवात्रायवर्द्धनं ॥ आयवात्रायजननः

२७

ताव

सर्वसत्यसत्वावहं ॥ लम्बी श्री सायकं वेव सर्वसत्यविवर्द्धनं ॥ मेधेमावं वा सत्वा
नाः नलीरुयमहामन ॥ नवंमकं रुगवान् पदसंनवलाकिरु ॥ वावलाकदि
म ॥ सर्वाभेशासुवधया दगा ॥ दक्षिणकनमहस्यः पन्यवद्धमसि रं ॥ नमवा
वमहायाह ॥ साधसाधमहाकथ ॥ नामान्गधमहाकागः सर्वसत्येकवसव ॥ या
निसंकीर्त्यमनजा ॥ सम्यकसूधनस्ववा ॥ सर्वयाविविनिर्मका ॥ सर्वस्वय

आर्य

५

गुह्यं विना ४ अकालमश्नन्निदयाः श्रुतायानि सुखावति ॥ नामदं संपवदमि
दवसंया ४ गृह्यनुभ ॥ अनूभादधर्म्मगद्वाह विष्यध्वं सुनिर्वृता ॥
उं लावन सुलावन गान गावा रुव सर्वसत्यान कंयिनिः सर्वसत्वरुः
त्रिष्टिसहस्रगुणः सहस्रगुण ॥ अं नभातगवतः अवलाकय २
मां सर्वसत्याना ५ रुं रुदृ स्वाहा ॥ अं गात्रगुगात्रगुत्र स्वाहा ॥ अं स

29

नाथ

ॐ विश्वं स्रजं ताम्रजः मे विंदं दयनिर्मल ॥ स्यामस्यामनूयीमहा
याह्युपवत्रवलरुविनः अयवाजिनामहात्रोदीविश्वरूपिमहावला ॥
ॐ संगी ४ नद्यथा ॥ ॐ कल्यानिमहा न जाः ला कवाग्रिमहायसा ४ ॥ सन
स्वतिविमा वाक्षि यस्तु श्रीयष्टिर्वर्चनि ॥ धतिदा यष्टिदा स्वाहा ४ ॥ अंका
वाकामनूयिनिः सर्वसत्यहित्ययूक्ता ॥ संग्रामास्तु वधी ऊया ॥ यस्तु

आर्जु
नी

निष्ठा सर्वत्र मानसा ॥ सर्वार्थसाधनी रुद्राः ॥ राघो वीर्यवती कथा ॥ अरुणा रणे
रुमिपुष्पाः ॥ श्रीमला केशवात्मजः ॥ नाना नामगुणाननाः ॥ सर्वसायविपरीति
॥ अं नालकया वलं विनिष्कृतं वनीयसाह ॥ नामाक्षरुवगणकः ॥ अतकी
रुमंदिनवान् नृप रुस्य मरुतः ॥ गुह्यं दवानामपि इहैव ॥ सोरुगधः ॥ रागाक
वधः ॥ सर्वकिल्बिषधामर्षं ॥ सर्ववाविपुमनं सर्वसत्यसुखावहं ॥ शिकार्लय

२२

ता २

यत्तदीमानः ॥ शिखानसमादिन ॥ ४ ॥ अथ ननेवका ननः ॥ नक्षत्रीयमवाप्रयाग
॥ इति नस्यागः ॥ सुखिनिर्गुद निडाधनवानः ॥ रुवगुः ॥ अरुवगुः ॥ महाया समवा
वयनसंभयगु ॥ वधनागुमाकं कवधववेहान ॥ अरुवगु ॥ मगुवामिगुताया
किगुगीनश्चापिदंष्ट्रिन ॥ ४ ॥ संभमसंकटदूरनाना रुय समष्टि ॥ ४ ॥ समवध
दवनामानिः ॥ सर्वरुयान्याहनि ॥ नाकात्रसर्पैर्हवकिः ॥ प्राप्रागिदियूलांभय ॥ ४ ॥

आर्य
श्री

गुरुद्वयिकायां नामाश्च न स नं वृक्षकारिव नं समार्यं ४॥
यधमावृत्त्यादि सुर् ॥

ॐ

॥

३१
ताश

ॐ नमो गुरुवणे आर्यश्रीव
श्रीः सोम्यनयिव न्यदाः वसु
वराः धलदीवा नदीः नौ वंस
मितादवीः यस्तु श्रीवर्द्धवर्द्धनी
सर्वगुमाह गः नमो नीनाल



सुखात्राये ॥ दिव्य नयी सुनीय
नीवसुखा नीवः वसुनीधी कवि
नथातकि वसुनाः यस्तु याय
ः वी याव नीमिवाशुदाः नामु
धीदवी ४ वी यादानधनधनी

जादि न

रुषिगारुतमाता शुभसर्वरुलधर विधीः इदीक शगधी शरिमा डग डग यवाकमाः
दावै नया वमिता दवीः वर्यधी दिव्य वधीः निवानी सर्वसी रान्याः कुरुल श्री र्यसगु
ताः दहति मालीधी वदीः सवदी सर्वगु मारु गा कृता नगा गनि बोदीः कोमा नी वि ग्व
र्यधीः विर्यया वसी ता दवीः जगदान न न मवनीः गायी स डग वया शः अदि सिद्धि वलः
यदा ४ दान यध्यम हा गौ गो ४ अजिता जिह विकामाः ऊदे रौ कैं क हि ता वी याः सैगु

३२
निमा

मारु वगी गुताः कानि यालमी ता दवीः गीलधी ध्यान आयधीः यर्मधी यर्मधी नि शुगः
यर्ममासनमा सनीः शुद्ध र्यधी महारु जाह मवर्क यरा कवीः विनामधी वनी दवीः यरु
यसु कवा वधीः नीवानी कटमा वरुः धान्या राल धनयीयाः गेवा रुक मह आदिः विद्या रुत
धरु वीधीः मातनी सर्वदहानीः वलवारी ग्व व ग्व नीः गन्यता ता वीधी दवीः ता वारा
ववि वर्जनीः वेचय कि विचय ग्वः दिर्यिनी कृ गद्यनीः रुद नि सर्वमालानीः सुक याता

आदि त

लकारवतिः वर्मदीवदमाताशुशुलाशुशुवागिनीः सलखनिविसागदीः वदुवर्मवि
हारीतिः ताथागतिमहाप्रम्यावकीदीधर्मवागीदीः कर्मधर्मश्रीविद्याः विस्वकावा
कुमधुलिः वाविसवमहासलवार्धं राकुतमखलीः वाचागधिमकिरीयत्राजदयादयरा
विनीः सर्वाथसाधनीशदाः सिद्ध्यामिहविक्रमाः दर्मनीवर्द्धमायनीः नष्टमाग्यायद
मनीः वागिग्वथामहासासुः रसाधिवकीवर्द्धमायनीः नष्टमाग्यायद

३३
जिमा

श्वनीः मनाहरीमहाकाकिः सोताग्ययीयदर्मनीः सथवाहकृयावृद्धिः सर्वनाथागतात्म
किता॥ नमस्तुतमहादवीसर्वसलाधदायनीः नमः सुदिव्यनयीश्वः वसन्तानामासुतः
अस्मरुर्धर्मनामसुकालयैर्यथदिमाः यात्रागिनियतंसिद्धिः श्रीश्रीगार्थमनामथा
न॥ यदस्मर्तुकनयार्थः आनन्यार्थसदावर्धः नस्तर्वक्ययथासः समन्तानामहदकः अथ
वागीलर्ग्यनाः सयजागिसवाहवतः प्रियश्रुदयवाक्यः नयवालीयदर्मनीः विप

धम

शुणीयकलमः अदयमयजायनः शानकहमीवत्रायाकाः यश्रायाकसखावनि४॥४
॥ -६३३- ॥ आर्यशीवसखावानामलेभुं नमनकैवद्वरायिर्नसमाय ॥ -६३३- ॥
१३ नमारावले आर्यवज्रविदात्रये ॥ नमावज्ञाय ॥ नर्वमयाकनमकसिन्म
मयरागवानः वज्रविविहन्ति ॥ सर्वशनीर्न वज्रमयः मविद्यायवज्रयाधिभव
ज्ञानरावनः वज्रसमाधिसमायत्रैः नमावज्रयाधिः वज्ञानरावनसर्ववज्रविहन्ति

२३
दा ३५

वोमहाकावसंरुर्नः वज्रसात्रयर्दरायनमा ॥ अद्विचर्यमत्ययः सत्यददद्विर्नर्वाः
सर्वगयराजिर्नः सर्वसत्त्वविदायनर्कः सर्वसत्त्वासादनकर्त्रे ॥ सर्वविद्यायुदनकर्त्रे ॥
सर्वविद्यासुसुनकर्त्रे ॥ सर्वकर्माविधिसनकर्त्रेः सर्वकर्माविदायनकर्त्रेः सर्वशहाः
सादनकर्त्रेः सर्वगुरुविभाकधकर्त्रे ॥ सर्वरुनयकर्मनकर्त्रे ॥ सर्वविद्यासुसुनकर्त्रे ॥
कवीः असिद्धानीसिद्धकर्त्रे ॥ असिद्धानीसिद्धकर्त्रे ॥ असिद्धानीसिद्धकर्त्रे ॥ असिद्धानीसिद्धकर्त्रे ॥

ॐ म

सयदः सर्वसत्त्वानां बद्धकैः शान्तिकैः यद्विकैः सर्वसत्त्वानां सुमनकवैः सर्वसत्त्वानां
हनकवैः ॐ मा मरु मरु वरुः सर्ववद्वानुतावायः यद्विश्रवज्जयाधी ४ यत्तावकानमा
बलकयाय ॥ नमा ४ वद्वज्जयानयः मरुयद्वसनायकय ॥ न यथा ॥ डं कुरु २ ताकय २
सुटय २ यन्नायय २ सर्वसत्त्वानां वावय २ सैवावय २ ववय २ विश्ववय २ गुम २ सक
मय २ सर्ववद्ववाविनिः कट २ सैकटय २ सर्वमरुनः यट २ संघट २ सर्वविद्यावज्ज २

३ॐ
दा ॐ

सुटवज्ज २ कट ॥ वज्ज २ मट ॥ वज्ज २ यथा वज्ज २ रुथा वज्ज २ रुथमैहनी सुवज्जयसाहा ॥ डं
हृलीधी २ वृक २ कुरु २ मित्रि २ वल २ वल २ कल २ वज्ज विज्जयायसाहा ॥ डं वज्ज किलिकि
नायसाहा ॥ डं कट २ मट २ वट २ माट २ नयमाट २ नायसाहा ॥ डं वल २ विल २ रुसल २ मालय
२ वज्ज विद्यायसाहा ॥ डं वृद्व २ रुद्व २ महा किलिकिलायसाहा ॥ डं वद्व २ महाकावः
किलिकिलायसाहा ॥ डं वल २ वल २ किलिकिलिकिलायसाहा ॥ डं गमय २ वज्ज किलिकि

४५ म

लायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
मिलवडा॥धुनिमिलवडा॥धुनिमिलवडा॥महावडा॥अयनिहगवडा॥अमायवडा॥
कहिवडा॥संघजायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
समकुवडानी॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
लघयजिन॥कलर्यटिटिटिटिटि॥नलदहश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥

३७
दाज

का॥महावचवडा॥वडीकसुका॥लायसाहा॥नमावचवडा॥नमावचवडा॥नमावचवडा॥नमावचवडा॥
कसनायगया॥तयथा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
नश्चक्र॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
श्चक्र॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥
निष्ठश्चक्र॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥डंनश्चक्रवर्णायसाहा॥

मंगल

वलः यत्नाकसा ४ महाहस्तिदक्षिणा यददाययसादा ॥ उं नमस्तुतमहागद्ययतय
सादा ॥ उं गः गः गः गः गः गः गः गः ॥ उं गद्ययतयसादा ॥ उं गद्ययत्रासादा
उं गद्ययति यजिनायसादा ॥ उं गद्ययि यरयसादा ॥ उं कव २ सादा ॥ उं कव २ सादा ॥
उं मल २ सादा ॥ उं दीमानद्वगद्ययति रुदयादी ॥ एकः शिल्पलयगावाः कलईदि
गावाः रिहवाः रिहदीवाः उयासकावाः उयाः सिकावाः यः कश्चि कार्यो मालरग

३६
मिमा

मनुसाधनं वासिबलयजीवाः दक्षकलरगमनं वाः वाककलरगनं वाः दक्षकलरगमदीवा
अनूधानं वाः कनवद्धाकगवर्गः यजीकृत्वा आर्यगद्ययति रुदयी सयवायानवात्र
कथी सर्वकार्यानि गत्यसिद्धिना रुगं सय ४ ॥ सर्वकत्रिकत्रहन्ति मदमलवृत्तिर्यं
समगर्थी यममीगद्य निदिनं दिनं कल्य मस्य यः सयवायानवात्रयितर्था मदासोता
ग्यं विद्यन्ति वाककलरगमनकालमहापासादाह वीद्यन्ति ॥ उं गद्ययति रुदयी सयवायानवात्रयितर्था मदासोता

वृध

वयं कृदीर्घायस्कृताम् । मया दायनिः । अथ खल्वार्यावलाकिने ग्वंवावाविसत्यमदा
 सत्वाऽल्लयीसनायकीयाकृतीजलियगारुत्वाः । रागवक्तुमकदवायक ॥ दसयनुत्तरा
 वनः । सर्वतथागताष्टुषाविजयानामर्धवधीः । दधयनुत्तरागता । अथ खल्वार्यावलाकिने
 सर्वावगित्यर्धमदलः । मवलाकासमन्तावलाकिने ग्वंवावाविसत्यमदा ॥ समायनश्चिमां
 सर्वतथागताष्टुषाविजयानामर्धवधीः । रागवक्तुमकदवायक ॥ दसयनुत्तरागता । अथ खल्वार्यावलाकिने

[illegible]

वध

विद्यानाविधिर्न॥ ॐ मूढमहामूढः महामूढा मनुयदेखाहा ॥ ॐ येसाकलपुत्रसर्व
तथागाष्टीयविजयनामवालेधीमहा मूढदधुमीवागीधीयगीरामयनासनीः लि
विताश्रुतययवाः अययवानेयवाः कविद्विष्टमधुकुमागृहसमृद्धयः मधुः
लयजीकृत्वा मूढागीयजीकृत्वाः यदकिंभीसहसंकर्तव्यः ऊथाविहवाभरयतः ॥ स्व
धुयदनामलिबिहवाः धर्मादेवोराहसिद्धयः सययधर्माकुवादनावा ॥ आनन्दम

४२
लाया

क्रा ३

लिंकयाकात्रयित्वा। सकेकविंशतिः वरुवत्वालिंशतवागी सहसंवासंययीरु
यताकायर्थधयदीयरावनेययादिकैः सर्वयजाति। यजयतः ॐ मीसर्वतथागताष्टी
यविजयानामवालेधीः वाययतः अकड्वीकतेः वेष्टममावयत। असेवकृतय
विमितायकावनाहविष्ठाति॥ दानेदानवीसकदिनायः सकसासायः यथागामिष्टीति
॥ सकसासायसकवर्षाधीः किवति॥ सकवर्षाधीसकवर्षायकिवति॥ सुनिवह

२५

विष्णुदस्यानाममहताहिकुसंघनाः साहं कथादहं हिकुसंघनाः ॥ सर्वदेवमहावक्त्रं
वाधिमस्वेमसत्वे ॥ नृपयन्नरगदानहिकुसामनुयगंसा ॥ अहिकुसामावधीनामः
दवतायाः सामयवदुमसामः यलताश्चरगदुकि ॥ सानदध्वगः नगृध्वगः नधध्वगः ननि
नध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नदध्वगः नदध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः
यिगस्याहिकुसामावधीनामदवतायाः नामजानाति ॥ सायिनदध्वगः नगृध्वगः न

निधध्वगः नमध्वगः नगृध्वगः नदध्वगः नमध्वगः नदध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः
॥ साहं हिकुसामावधीनामदवतायाः नामजानाति ॥ अहं मयि ॥ नदध्वगः नदध्वगः नमध्वगः
नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः
यदानिहगवति ॥ नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः नमध्वगः
मसि ॥ डलमसि ॥ गुलमसि ॥ विवलमसि ॥ महाविवलमसि ॥ अलकानमसि ॥ अलकानमसि ॥

सूक्त

ॐ अथ वा किं ता मा ग्री विना म द व तां यां ॥ य र्थं मां र्गा य या ड य मां र्गा य या वा ऊ क ल ताः
मां र्गा य या ध ऊ न य द तां मां र्गा य या ह स्ति तां मां र्गा य या स्वी ल क य मां र्गा य या अ ग्नि क
य मां र्गा य या उ क र य मां र्गा य या स र्व प र्य थि कः य त्प मि क र य मां र्गा य या आ क ल वः
अ ना क ल वः म र्दि ग वः अ म र्दि ग वः सिं ह का म व दः या य ता म व दः स र्य ता म व दः
म र्व ता म व दः ॥ ग य था ॥ ॐ अ ला ता ला म द ला स त्वा म र्दि गि ल क र मां स या ग्री वा ना

४३
यसं

नाः स र्व स त्वा नां व स र्व क र्थ यि द वा व र्य स्वा दा ॥ न मा व ल क या या ॐ न मा र्गा व ल क या य
मा ग्री वि द व ता यै ॥ ग य था ॥ ॐ व र्णा वि व ला लीः व रा ह म वि स र्व इ ष्ट य इ ष्ट नां व र्णा
खं व द २ स्वा दा ॥ ॐ मा ग्री वि स्वा दा ॥ ॐ व न व व र्णा वी व द ग्री २ व ला ली व ला ह म वि स र्व
इ ष्ट य इ ष्ट नां व ॥ व र्णा म र्व व द २ स्वा दा ॥ ॐ ॥ आ र्य मा ग्री वि ना म द व दी स मा फ ॥
ॐ न मा र्गा व ल क या यै ॥ न वं म या डु त म क सि न म य र्गा वा न ॥ अ द क

शनि ३

वयो महानरायाः मन्त्रकदवनागयकः गवर्धसदगद उकि नममहावरा यस्मात्ताः
दिसामां गावद्वद्वद्वस्यगिहुक दानिध्वनारु कहुतिलेष्टा विंहागिगि। नद्वका।
दतिगुर्था मात्रामहावज समयालंका लाविष्मनाधिष्ठितासिंहासनतः विद्वयगिस्म।
अनकवाधिसत्त्वमरुसहलो कयथा। वजया धिनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। व
जया धिनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। वजसन्नयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वनः

४ वं
व मा

वजवायद्वद्वद्वनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। वजविकमन्नयनामवाधिसत्त्वमहाः
सत्त्वन। वमहासत्त्वन। वजालकालनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। जागित्वजन्नयनाम
वाधिसत्त्वमहासत्त्वन। अवलाकिर्गन्धवानयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। समका
वलाकिर्गन्धवानयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। यर्भकदुन्नयनामवाधिसत्त्वम
हासत्त्वन। लोकधीयानैयंयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। विकसितवक्त्रनवा। मम

सन्निवृ

वाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ यश्चैव नमदासत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ यश्चैव नमदासत्त्वं नमदासत्त्वं न॥
मवाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ यश्चैव नमदासत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ दीयंकवन्नव
नामवाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ मश्चैव नमदासत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ मेजीयन्नव
नामवाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ नवंप्रमत्तावाधिसत्त्वं नमदासत्त्वं न॥ यल्लुक्ता॥ धर्म
दत्तयति स्म॥ आद्योक्त्या नमश्चैव कल्याणं ययवसानकल्याणं स्वर्धंसवकुनेकवलं

४६
धर्म

यद्विद्युर्ध्वययवदागवत्तवयसंयुक्तासयनिसि॥ विन्नामधिसत्त्वं नमदासत्त्वं नमदासत्त्वं न॥
मंथर्मययायंदत्तयनिसि॥ अर्थस्वलरगवान्॥ वज्रयादीरुयत्त्वमधुलंमवलाकास
नाट्टइत्यया॥ वद्धाविश्वाननरगवत्तंअनकमरुतहसुयदक्षिध्वरुय॥ यद्यम्ययल्लानिय
यसर्गश्चैव नवजययैकमायनीलयात्॥ वजाकुलिकुत्तासद्वदयापुतिष्ठया॥ रगवत्तमरुद
वावत्॥ गदाध्वरगा॥ वाद्वगदाध्वरगाध्वः॥ वीडावीडवृयाध्वः॥ कलाकुलवृयाध्वः॥ सत्त्वानां॥

मनि ३

विदुः यकि स्म ॥ कर्षी चिदु दया मय ह वनि ॥ कं वा चिदु या ध मय ह वनि स्म ॥ कर्षी चि
 न्दी या य मत्वा नां मल्या य ४ कर्षी स्म ॥ नदं सत्वा नां ० मय दय न वा ह यनि ॥ स्म ॥ तर्षी यनु
 रग व ना ह ० ॥ धर्म यया र्यः यन सर्व सत्वा नां ॥ सर्व यद यया २ चां विं ते यनि ॥ रग व ना ह
 मा ध मा ध व ऊ या धीः यत्वं सर्व सत्वा नां ॥ मथा य हि ना य स य यो ध ॥ कया चि र्म मल्या य ॥ मदा य
 प्रा नि गु धा न रं ॥ गथा ग न य प्रिय रू मि ॥ गत रू ध य सा धू व ॥ मरू य ॥ मन सि क ल ना वि धं

22

५३

इह नैव हाथाः मय न्यानां मरिक्कलानि शिरिषथा नां ॥ गुष्मानि गुष्क कवं ॥ दिव्यायूजाम
 यन्त्राः जायन्त्राः धयन्त्राः यथानकर्मवर्धनं दनः सर्वस्य यथा गुष्मि । कगहा ॥ यजिगाय
 रियं कति । निहस्तानं ऊसानिगाः दवाश्च सारथेव किन्नरार्थेव सान्वा ॥ यथा शुद्धा
 च सारथेवः यदनाथेव सर्वसः समयनिष्ठत्वायाः ॥ महाक नग्नक ऊसा ॥ यजाश्च यव
 कामिः मडावायि यथा कर्म ॥ ० ॥ अथ यत्नमगवान्माका मनिस्तथागता ॥

हनित्र

सुहृदयात्क २५॥ विविदि नना मलममी निष्कार्य ॥ यद्दानं मद्रियुवधय किस्स ॥ अथ
गह्वर्यादव सर्वयद्वा ॥ आदिद्यादया ॥ उल्लयी ॥ रुगा वनक्षक म ॥ निरुधवागामदरु
सर्वयुजाहि ॥ यजु यित्वा यधम्या जानरि नियत्य रुगा ऊलि ॥ यत्तारु त्वारु रावक म
वमाह ॥ अनयुहिना वर्यः ॥ रुगा वता नथगता नाहली ॥ सम्यक् वद्वाय ॥ नदधयः
तु ररावान् नव मय यो यः ॥ यन वयं सा मयीरुत्वा ॥ धर्मय यो यी धर्मता न कस्यः

५३
यमा

२ कां कर्मा म ॥ युकिं यत्रिजानं यत्रिग्रहं यत्रिया ॥ नर्वा किस्स सनय नंदद्युयत्रिदार्जस
मुयत्रिहा ॥ विषद ॥ खनं विषना धनं ॥ शीमा वं धं ॥ धनधी वं धन कया मा ॥ अथवलरुगा
वान्नाम मद्रिस्सु थागतायद्दानां ॥ यजुं मद्रुधवा यन सा ॥ यथानुक्रमं वधुं रुद न ॥ दि
शा ॥ प्रायदिगाशु ॥ गधमधुलकं रुत्वा ॥ यमस्य कर्षुका रुः ॥ दादमीं गुल्यमा र्गं ॥ चहु दाली
दिशारुनं कर्षुयां ॥ नमश्च विवक सिनय प्राय विविक्त वरु ॥ दवता स्मरं ॥ कायस्वययव

मानव

[illegible]

धृतिशानि श्रुताय नमः ४ स्वाहा ॥ उरुलदल ॥ उं हिना जन सन्निता यमरु ययाय नमः
 ४ स्वाहा ॥ ग्राहव नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ शानदल ॥ उं धमांरु सन्निता यज्जानिकं नवनमः ४
 होस्वो ॥ ॥ मधुल यव्वदाल वक्षारगवान ॥ दक्षि दक्ष ववज याधि ॥ यधि
 मद्या नलाकनाथ ॥ उरुल दक्ष मंरुधीक मा ॥ यव्वरु वका नाः सर्वगदा ॥ यव्वदक्षि
 दकार्दसर्वनक्षत्रा ॥ दक्षि दक्ष यधि मकार्दसर्व यदवानां ॥ यधि मारुल कार्दसः

मनि ३

याधीशदानां यजामस्तु नाह दयानिः यथिगसिद्धाधीः यथा नृकमवर्धुह दनः गं
धमधुलंकं कृत्वाः गममत्सयकनकवयादितो जन अशंदत्वा नृणां अथारु वधतं वा
वासनकं कमस्तु ऊय नृ॥ यथा यनव ऊयाधीशह माह का नाम धात्रीधीः सकवा
नवा वयिक्त्या निः सर्वग सा आदिष्टा दयाः वक्रां वलद्युकिं कलिकु निः॥ यथि
दश सा सा वयिक्तिः गमा य दीर्घयिक्तं कनी यनिः॥ यत्र खल यनव ऊयाधिति कृनाति

अ ३
धमा

कृतीनाः मया सकाया छिकानां वः अनध्वस्त्या यानियाः यथा कर्तुं यन नियति यतिः॥ यथा
मकालमयना कालयि यनिः॥ ॥ यत्र खल यनव ऊया वक्रां वलद्युकिं कलिकु निः॥ यथा
यजुयित्वा दिन दिनः वयि यनिः॥ तस्य धर्म लान कस्यः सर्वग सा सर्वान्ना सर्व सा यत्रिय वः
यनिः॥ तत्क वादयि दाना वं ना सयि यनिः॥ ॥ अथ खल अक मनि सुधा गमा ४ यन वयि वरु
माह का नाम धात्रीधीः वन सा वक्रा यः न मा धर्मा यः न मः संघा यः ॥ न मा व ऊध

मन्त्रि ३

नाय॥ नमः यद्भवनाय॥ नमः कृमाय॥ नमः ४ सर्वगुहाय॥ नमः सर्वासां यन्त्रियुक्तकानां॥ नमः नक्त
कानां॥ नमः द्वादशारिनां॥ नमः सर्वविद्वानां॥ नमः ॥ उँ वृक्षं २ शुद्धं २ वज्रं २ यद्भिरस्य २ यस्य
२ स्म २ कीदृशं २ किदयं २ द्या २ द्याटयं २ सर्वविद्यानः ॥ क २ २ समकार्यः ॥ हि २ हि २ ममकार्य
सर्वदृष्टान्तरूपयय २ ॥ न २ दानं २ दायय २ दृष्टं २ दर्शयामा नं॥ ॥ अमकस्य २ नक्त २ नक्तमां
सर्वसत्त्वानां ॥ सर्वगुहान्तरूपयिदानीवा २ य २ सर्वरूपनिवा २ य २ रगादतिमाहात्म्याय ॥ य ॥

[illegible]

१३ नमो श्री गुरुभ्यो नमः
 सत्यं ॥ चतुर्मासं कर्म
 हविर्मासं ॥ ऊक्तं वनं जना थ
 नमो ईमं कथादसति कर्म
 सत्वे ॥ कुरु सत्त्वगवा नमः



वाय ॥ ३ नमः सर्ववद्ववा वि
 सिन्मसय रुगवा नृणा वसी वि
 विद्युस्या नाममहता हि कुरु संघ
 ४ संवद्वये ध्यवा वि सत्वे महा
 धीयं कुमारं नृणा मामनुयत

१/३

समं अस्मिन् मन्त्रे उच्यते विद्यायां दिशि अथ विमित्तं यथा संवद्वया नामला कथां शय विमिता यत्ना
 नमः विनिवित्तं नमो वाजाय तथ गताया हं नमः संवद्वये ४ विद्याय वनसंघत्र ४ सगता वा क वि
 दनं रु २४ य २४ उच्यते सा २४ ४ सा सा दवानं वमनया नां वद्ववा नृणा ॥ अतस्तिष्ठति वि
 यत जायय किं सुखानां वधर्मं दसय किं सा ॥ ४ दमं रु धी कुमारं नृणा यं ऊं व धीय कामनया नां
 दक्षिणा यथा वयं सता यत विद्यानि ॥ नमो वरुणा का वमनानि दिष्टानि ॥ यत सत्त्व यत मं रु धी स

लोअयविमिताययसुथागतस्यगुनवर्क्ययविकिरिनामवर्मयथायविमिष्यकिनामध्वयम
 यिछाव्यकिनायविमिष्यकि॥यावत्यसुकगतामयिकृत्वागृहअविमिष्यकि॥ययध्वयदीयगन्ध
 मात्यविलयने४वर्धुवीववर्धुवध्वजयध्वयताकाहियअयिष्यकियविमिष्यनायय४यनवव
 वेसतायय४रविमिष्यकि॥अवसलयनमरुधीसत्वासुस्यायविमिताययूनमविनिविदितनका
 वाऊतथागतायार्हकंसंम्वकंवध्वय॥ ॥तयथा॥नामायुक्तवसंत॥आयकि॥नयामयि

जग

आयविर्वधयिष्यकि॥ययनवयिदिनाययतसायविमिताययसुथागतस्यगुनवर्क्ययविकिरिनामवर्मयथायविमिष्यकिनामध्वयम
 वातिं॥आयकिनिषाययिष्यकि॥नयामिमंगुधसंसायवविमिष्यकि॥ ॥तयथा॥
 उंनमारगवतअयविमिताययूनमविनिविदितनकावाऊतथागतायार्हकंसंम्वकंवध्वय
 य॥ ॥तयथा॥ ॥उंयध्वमहायध्वअयविमिताययूनमविनिविदितनकावाऊतथागतायार्हकंसंम्वकंवध्वय
 यिष्यकि॥उंमर्वसकाययविषुध्वमर्मनगगनसमर्गतस्यतावविषुध्वमहानययविमिताययूनमविनिविदितनका

॥

मिहगुनसंख्या ॐ लोकधातुगमिथानि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय नमः ॥
 त. तं आवा जायतथा गताया हन संस्य सं व दाय ॥ ॥ तद्यथा ॥ ॐ यं नरम हायं न अथ विमिताय नमः ॥
 अथ विमिताय यं नमः संता वायश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारयश्चिदुद्धर्मगगनसमगगनस्वता
 वविधुद्धमहानययविवाहस्वाहा ॥ ॥ तनयवत्पुनसमयनवनवतिनां व दकाटी नां व कमन
 नैक स्वदन ॐ दसय विमिताय ४ संता यितं ॥ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय नमः ॥

गविनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हं. सम्यकं वक्ष्याय ॥ गयथा ॥ ॥ उं यध्य २ म
 हायध्य. अयत्रिमित यध्य. अयत्रिमिता यध्य. न संता बायश्चितं ॥ ॥ उं सर्वसस्का २
 यत्रिष्टु च धर्मगतगगनसमर्गत स्वतावविष्टु च महानययत्रिता वस्साहा ॥ गंन
 यलयनः समयनसकती नां वक्षकाटी नामक मननेक श्वन नन्दमयत्रिमिता यस्सुंता
 यितं ॥ ॥ उं नमातगवत अयत्रिमिता यस्सुंता विनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हं

न संम्यकं वक्ष्याय ॥ गयथा ॥ ॥ उं यध्य २ म हायध्य. अयत्रिमित यध्य. अयत्रिमिता यध्य
 धर्मगतगगनसमर्गत स्वतावविष्टु च महानययत्रिता वस्साहा ॥ गंन
 यलयनः समयनसकती नां वक्षकाटी नामक मननेक श्वन नन्दमयत्रिमिता यस्सुंता
 यितं ॥ ॥ उं नमातगवत अयत्रिमिता यस्सुंता विनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हं. सम्यकं वक्ष्याय ॥ गयथा ॥

ॐ यद्ध २ मदा यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त ॥ ॐ सर्व
 सस्का वय विष्ठु च धर्म त गगन समर्ग क सहा व विष्ठु च मदान यय निवा न स्वाहा ॥
 त न यव न यन सम यन यं व सती नां व द्वा का टी ना म क मन ने क स्व न न ॐ दं मय निमित्त स गं हा
 धितं ॥ ॥ ॐ न मा र ग व न अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त
 न सं म कं व द्वा य ॥ ॥ त य था ॥ ॥ ॐ यद्ध २ मदा यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त

यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त ॥ ॐ सर्व सस्का वय विष्ठु च धर्म त गगन समर्ग क सहा व वि
 छु च मदान यय निवा न स्वाहा ॥ ॥ त न यव न यन सम यन यं व सती नां व द्वा का टी नां
 म क मन ने क स्व न न ॐ दं मय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त ॥ ॐ न मा र ग व न अय निमित्त
 यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त
 ॐ यद्ध २ मदा यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त यद्ध अय निमित्त ॥ ॐ

सर्वसंस्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्वरावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥
 ननखनयन-समयन-यवृष्टिसंतीनां-वृद्धकाटीना-भक्तमननैकस्वयन-ॐदमयत्रिमिताय
 सुकृतयितं ॥ ॥ उं नमो रागवत अयत्रिमितायज्ञानसुविनिवित-तं कृत्वा ज्ञाय-तथागता
 यादृक् संसृजं वदय ॥ ॥ तद्यथा ॥ ॥ उं यद्यश्मदायद्य अयत्रिमितायद्य अयत्रिः
 मितायद्यज्ञानसंतापयश्चितं ॥ ॥ उं सर्वसंस्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्व

रावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥ ॥ ननखनयन-समयन-वृद्धकाटीनां-वृद्ध
 काटीना-भक्तमननैकस्वयन-ॐदमयत्रिमितायसुकृतयितं ॥ ॥ उं नमो रागवत अयत्रिः
 मितायज्ञानसुविनिवित-तं कृत्वा ज्ञाय-तथागतायादृक् संसृजं वदय ॥ ॥ तद्यथा ॥
 उं यद्यश्मदायद्य अयत्रिमितायद्य अयत्रिमितायद्यज्ञानसंतापयश्चितं ॥ ॥ उं सर्वसं
 स्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्वरावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥ ॥ ननख

लयनः समयनः यच्छ्रुतिसतीनां वृद्धकाटीनां मकमननेकस्वन्नन। ॐ दमयत्रिमितायमं सं
 धितं॥ ॥ ॐ नमो गुरुवत्तं अयत्रिमितायसूतसविनिधितं कृत्वा जायतथागताया हेतुं सं
 सृज्याय॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ ॐ यध्यमहायध्य अयत्रिमितयध्य अयत्रिमिताययध्यसूत
 संतात्रायधितं॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारयत्रिधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतस्वतावविधुद्धमहा न
 ययत्रिवात्रसाहा॥ ॥ ततस्वल्नयनः समयनः दसगंगानदी. वात्रकायमानवृद्धकृत्

ॐ २

काटीनामकमननेकस्वन्नन। ॐ दमयत्रिमितायसूतसविनिधितं॥ ॥ ॐ नमो गुरुवत्तं अय
 त्रिमितायसूतसविनिधितं कृत्वा जायतथागताया हेतुं संसृज्याय॥ ॥ तद्यथा॥ ॥
 ॐ यध्यमहायध्य अयत्रिमितयध्य अयत्रिमिताययध्यसूतसंतात्रायधितं॥ ॥ ॐ स
 र्वसंस्कारयत्रिधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतस्वतावविधुद्धमहा नययत्रिवात्रसाहा॥ ॥
 ॐ दमयत्रिमितायसूतसविनिधितं लिपिष्यन्निलिवाययिष्यन्ति सप्तकायत्रयिष्यावर्षसतायखावर्षिष्यन्ति

[illegible][illegible]

सं धसकसहसात्रिलियायितानियतिष्टायितानिरुविष्टयन्ति॥ ॥डंनमारुगवर्तजयत्रिमि
 तायल्लनसविनिवित्तकदाजायतथागतायार्हकसंमयकंवदाय॥ ॥तद्यथा॥ ॥
 डंयध्ययध्यमहायध्यजयत्रिमितयध्यजयत्रिमिताययध्यल्लनसंतात्रायश्चित्॥ ॥
 डंसर्वसस्कात्रयत्रिष्ठुधधर्मकगगनसमर्गतस्वतावविष्ठुधमहानययत्रिवात्रसादा॥
 ऊर्द्वमयत्रिमितायल्लिष्टयन्तिलियाययिष्टयन्ति॥तद्वकुलसिक्तधर्मवाऊकासहसाः॥

त्रिलियायितानियतिष्टायितानिरुविष्टयन्ति॥ ॥डंनमारुगवर्तजयत्रिमितायल्ल
 नमुविनिवित्तकदाजायतथागतायार्हकसंमयकंवदाय॥ ॥तद्यथा॥ ॥डंयध्य
 यध्यमहायध्यजयत्रिमितयध्यजयत्रिमिताययध्यल्लनसंतात्रायश्चित्॥ ॥डंसर्व
 सस्कात्रयत्रिष्ठुधधर्मकगगनसमर्गतस्वतावविष्ठुधमहानययत्रिवात्रसादा॥ ॥
 ऊर्द्वमयत्रिमितायल्लुल्लिष्टयन्तिलियाययिष्टयन्ति॥तस्ययल्लनकुर्योकातिकर्मावय

नानियलिकुयंगरुमि॥ ॥ उँ नमो हगवतं अयमिमितायस्म नम विनिविदं नंका
 वाजायतथागतायार्हकं संस्यकं वदय॥ ॥ तथथा ॥ ॥ उँ यध्ययध्यमसाय
 ध्वः अयमिमितयध्यः अयमिमिताययध्यः स्म न संता वायमिन्त ॥ ॥ उँ सर्वसका
 वयमिष्ठुद्धः धर्मगतगगनसमर्गतस्तु वविष्ठुद्धः सदा नययविवात्रसादा ॥ ॥
 ऊँ दमयमिमितायसुं लिखिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति ॥ तस्य नमावावासावका ॥

उँ

का वा ऊरुवा वाकसावानाका मूरु वतालं प्रयाक ॥ ॥ उँ नमो हगवतं अयमि
 मितायस्म नम विनिविदं नंका वाजायतथागतायार्हकं संस्यकं वदय॥ ॥ तथथा ॥
 उँ यध्ययध्यमसायध्यः अयमिमितयध्यः अयमिमिताययध्यः स्म न संता वायमिन्त ॥ ॥
 उँ सर्वसका वयमिष्ठुद्धः धर्मगतगगनसमर्गतस्तु वविष्ठुद्धः सदा नययविवात्रसादा ॥ ॥
 ऊँ दमयमिमितायसुं लिखिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति ॥ तस्य नमवतं तावद्वका टीसुसुंदरं

नंदस्यक्तिवृद्धसत्त्वसहस्रं नंदसूक्तस्योयनामयक्तिवृद्धसूक्तकासयक्ति. नातकाकावि
 मतिवृद्धादयिकवं॥ ॥ उं नमातगावतं अयत्रिमितायल्लनसविनिविक्त. तं कयाका
 यतथागतायाहं नसम्यक् वदाम॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यद्ययद्यमहायद्य. अयत्रिमि
 तयद्य. अयत्रिमिताययद्य. ल्लनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उं सर्वसस्कात्रयत्रिभुवधर्मतः
 गगनसमर्गतस्वरावविभुध. महानययत्रिवात्रसादा॥ ॥ ऊं दमयत्रिमितासूक्तः

लिख्यन्ति लिखापयिष्यन्ति. तस्य वत्यात्रामहात्राका वृद्धसमनस्य दामका वयनगुफिक
 विष्यन्ति॥ ॥ उं नमातगावतं अयत्रिमितायल्लनसविनिविक्त. तं कयाकाय. तथागता
 याहं नसम्यक् वदाम॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यद्ययद्यमहायद्य. अयत्रिमितयद्य
 अयत्रिमिताययद्य. ल्लनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उं सर्वसस्कात्रयत्रिभुवधर्मतः गगनस
 मर्गतस्वरावविभुधमहानययत्रिवात्रसादा॥ ॥ ऊं दयुत्रिमियसूक्तं लिख्यन्ति लिखा

[illegible]

क्रि॥ संयुधिदीयदसत्रेतरुत्वंदनीकस्यय४ऊनिऊअतविद्यान्ति॥ कंवांति केत्यनिगता
 नांमृगयक्षिदनाकृष्टयतनियतितसर्वजनरुद्रायासंम्यक्वाधिमाहि संलघट॥
 उंनमातृगवतजयत्रिमितायस्त्वनमविनिविततक्षत्राजायतथागतायाहेकसंम्यक्संवज्ञायः
 ॥ कथथा॥ ॥ उंयध्यध्यसदायध्यजयत्रिमितयध्यजयत्रिमिताययध्यस्त्वनसंलघायाधि
 त॥ ॥ उंसर्वसंस्कारयत्रिष्ठुद्धर्मतगगनसमर्गतस्वतवविष्ठुद्धमदानययत्रिवाय

स्वाहा॥ ॥ ऊँ दमयन्मितायस्सुं. निविश्वंति. निवायंस्वति. नस्यतितावकदा
 विहयि. यमिन्मयकं॥ ॥ उँ नसातगवतः अयन्मितायस्सुनसु विनिविश्वंति कदा
 जायतथागतायाहं संमयकं वदाम॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्य अय
 निमित्तयध्य. अयन्मिताययध्य. स्तनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उँ सर्वसंतात्रायश्चिंत
 धर्मतागानसमर्गनस्वतावविद्युधमहानययदिवावस्वाहा॥ ॥ ऊँ दमयन्मिताय

७६

तायस्सुं. तत्राऊं धर्मायथायं वदाम्यनकमयितायदा नंदस्यतिस्संनकिसाहसुमहासा
 हसुलोककाकुसुमप्रलयविद्युत्कृत्यादानचरुस्ययजायध्यस्संमययमानं संकं गानं
 कुं॥ तनु अयन्मिताय. सुस्ययध्यस्सुधयमानसंके. गानयिनु॥ ॥ उँ नसातग
 वतः अयन्मितायस्सुनसु विनिविश्वंति कदा जाय. तथागतायाहं संमयकं वदाम॥ ॥
 तद्यथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्य अयन्मिताययध्य. अयन्मिताययध्य स्तनसंतात्राय

श्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवा
 प्रसादा॥ ॥ ऊँ दयविमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतवत अयविमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयविमित
 यध्यअयविमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन

३६

समर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवाप्रसादा॥ ॥ ऊँ दयविमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतवत अयविमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयविमित
 यध्यअयविमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन
 समर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवाप्रसादा॥ ॥ ऊँ दयविमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतवत अयविमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयविमित
 यध्यअयविमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन

धस्यमानं संकंगनयितुं॥ ननु अयमिति ता यस्तु स्य यध्यसं धस्यमानं संकंगनयितुं॥
 उं नमातगावत अयमिति ता यस्तु नस विनिश्चितं कं कं जायत थागता या हेनं संसा संवदा
 य॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यध्ययध्यमदायध्य अयमिति ता यध्य अयमिति ता यध्यस्तु
 न संसायायश्चितं॥ ॥ उं सर्वसंसायायश्चितं उं धर्मो तगागनसमर्गो तस्मात्तद्विद्युं
 महानययश्चितं॥ ॥ उथावतायासहासमदुदकयानियधुं हं ययकं कं

१०

विद्मगनयितुं॥ ननु अयमिति ता यस्तु स्य यध्यसं धस्यमानं संकंगनयितुं॥ ॥ उं नमातगाव
 त अयमिति ता यस्तु नस विनिश्चितः कं कं जायत थागता या हेनं संसा संवदाय॥
 ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यध्ययध्यमदायध्य अयमिति ता यध्य अयमिति ता यध्यस्तु न संसायाय
 श्चितं॥ ॥ उं सर्वसंसायायश्चितं उं धर्मो तगागनसमर्गो तस्मात्तद्विद्युं महानययश्चितः
 वासहा॥ ॥ उं दसयमिति ता यस्तु लिखित्यकिं लिखाययिष्यकिं सक्त्ययस्तु

शिष्यक्रिंतनदससदिहसर्वेवैद्वेदगयसर्वेनथागतावेदितायक्रिताऊवतविशक्ति।
 उंनमातरावतअयशिमितायज्ञानसविनितितनंक्रवाजायतथागतायार्हंनंसंयक्रंवद्वा
 य॥ ॥तद्यथा॥ ॥उंयद्यंयद्यमहायद्यःअयशिमितयद्यःअयशिमिताययद्यः
 ह्ननसंतायायशितं॥ ॥उंसर्वसंकात्रयाविष्ठेद्वमतेरागनसमगतस्यतावविष्ठ
 द्वमहानययनिवात्रसादा॥ ॥अथतरावा नूतस्याश्चयायामिमागाथामताषट्॥४

॥ ॐ ॥ दानववनसमर्गतवद्धः दानववाधिराजाननसिंहः दानववस्यवद्धयक्रिसदृ
 ॥ काव्रनिकेस्ययवयविसाक ॥ १ ॥ शीलववनसमर्गतवद्धः शीलववाधिराजाननसिंहः
 ॥ शीलववस्यवद्धयक्रिसदृ ॥ काव्रनिकेस्ययवयविसाक ॥ २ ॥ शक्रिववनसमर्गतव
 ॥ दृ ॥ शक्रिववाधिराजाननसिंहः शक्रिववस्यवद्धयक्रिसदृ ॥ काव्रनिकेस्ययवय
 ॥ विसाक ॥ ३ ॥ वीर्यवल्लनसमर्गतवद्धः वीर्यववाधिराजाननसिंहः वीर्यववस्य

दियत ॥ ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥
 ॥ १ ॥ वरुणसत्त्व उवाच ॥
 संनमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं निवाच ॥
 नृद्विषयिणी ॥ ३ ॥ मम व
 तालयादस्य यनं उदयं कुमर



ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥
 नीलं कुननिवाकालं ॥ २ ॥
 निवाकालं ॥ मम मम निरुत्तं
 ऊरुनीलं कउष्टी स्वर्गवयं या
 गधुलं ॥ ४ ॥ आकाराकाय

॥३॥

॥ वलातस्य वेवाचनः दक्षिणमलसंरुः यविमज्जितातः उरुवज्रभायसिद्धिः ॥ ५ ॥ ॥२॥
 तदवीयज्ञाय नमिता ॥ वरुणसत्त्व उवाच ॥ यद्यद्यज्ञाय नमिता ॥ ४ ॥ वेवाचनसि
 ब्राह्मणः वाममश्वाज्जितातः अक्षात्तदयज्ञातः लवातो अभाययदं ॥ ५ ॥ वेवा
 चनमहाजातिष्ठुवर्धुमहाकलः स्वतः पीतः वक्रः श्वामः वरुवक्रवत्त्वहं ॥ ४
 ॥ १ ॥ यनमग्नेवज्रावाच्यवज्रयं ध्वं ध्वं ध्वं ॥ यज्ञज्ञानासमालिङ्गसर्वतथाग
 त्वहं ॥ ६ ॥ तासाहवगगनगंज्जितिराहव रुद्रय ॥ कर्षुववज्रयानिजिज्ञा

यादुलोकसुख ॥ २ ॥ सनातनकर्मरुचीकायसर्वद्योवननविक्रि ॥ सास्यसेवी
 यज्ञातःवीजसमकृतदत्तं ॥ १० ॥ रुद्रदहनजगमांतकुरुजवामअयवाडिताम
 यज्ञातादयगीवागुक्षअसुतकृद्युत्रि ॥ ११ ॥ अवलदहनवाहवामवाहःतर्कियाज
 नीलदहनजानःवामजानमहावल ॥ १२ ॥ उष्ट्रीयवकवर्तिस्यमस्यस्ययनंसम ॥ अष्टद
 धृतमाजानयातालसंरुितामहं ॥ १३ ॥ अथयज्ञयावमिताडवाय ॥ १४ ॥ दुरुदवीस

माहवःवामकल्माहवन्नाकमाका ॥ १५ ॥ माहवतिलावनाःदयवतिमा
 तकिःवागवतिःयाहुवादवीःतावावकयत्रि ॥ १६ ॥ युधिवीवायनायाताःआयवकुश
 मासकिःतजवकुशयाहुवावाःतावायकिर्लिता ॥ १७ ॥ वकुसुवावाय ॥ १८ ॥ विष्टवकुश
 मिस्ययनःदुरुदिसंवकुशविःमाकासगगधराकमध्यमस्य ॥ १९ ॥ तदुयवववायनः
 दहनवत्संतवःयश्चिमअमितातःउरुवअमायसिद्धि ॥ २० ॥ अरुवकनवायनाःतेसतद

दीप्तासक्तिः वायव्याद्युत्पादनीः ॐ सामंती. आर्यानाम् ॥ ॐ तिरातसद्युत्पातं ॥ २१ ॥ अथगुरुस्य
 प्रयवजाः नैऋतसद्युत्पादनीः वायव्याद्युत्पादनीः ॐ सामंती. आर्यानाम् ॥ २२ ॥ यद्येवाश्रयितिका
 यामैवीयश्रुतिगर्तः दक्षिणस्युत्पादनीः वक्रयानिसर्गर्तव ॥ २३ ॥ यद्यश्रिस्युत्पादनीः वा
 कस्यः नैऋतीः सर्वेनावयनविष्कम्भिः समन्ततदुत्पादनी ॥ २४ ॥ यद्येवाश्रयितिका
 दक्षिणस्युत्पादनीः यद्यश्रिस्युत्पादनीः उत्तरस्युत्पादनीः ॥ २५ ॥ ॐ सामंती

[illegible]

वदहंरुट॥मलमकु॥ॐअवलहंसां॥द्वितीयमलमकु॥ॐहंरुट॥गीयमलम
कु॥ॐ॥हृदयमकु॥ॐ॥हृदयमकुद्वितीय॥ॐ॥हृदयः॥हृदयमकु॥ॐ॥गीयम
मागह॥गीवहल॥ॐ॥ॐ॥अविनिविनमागवनिहं॥हं॥हं॥हं॥ॐ॥हं॥हं॥हं॥
वह॥वह॥वह॥वह॥कह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥
माह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥

ॐ॥गीय॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥
ॐ॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥
वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥
वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥
वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥वह॥

सा नयमानय कोमल शुद्ध लोकोत्पन्न वजीर नमस्ते पुनि ह नवलया कालः
यजोत्तमसु नमः स्वाहा ॥ द्वितीयामाला मन्त्रः ॥ नमः सर्वोपायप्रिय प्रकल्प ॥
सर्वेधागत्य ॥ सर्वजोत्तमाय वधु मदायाव नस्त्यटय हं कुमय २ हं कुट होमो
॥ हृदयमाला मन्त्रः ॥ ॐ नित्यं वलानां सामान्यमन्त्रः ॥ ॐ हं वल हं दृष्ट ॥ ॐ
मावल हं दृष्ट ॥ ॐ यीतावल हं दृष्ट ॥ ॐ प्रकावल हं दृष्ट ॥ ॐ ध्यामावल हं दृष्ट ॥

विरागमन्त्रः ॥ ॐ हं वल हं दृष्ट ॥ मूलमन्त्रः ॥ ॐ प्रह्लाया प्रमिन
हं दृष्ट ॥ द्वितीयमूलमन्त्रः ॥ ॐ वो ह नि हं दृष्ट ॥ हृदीयमूलमन्त्रः ॥
ॐ वि वृष्टा वई निरुल २ मका वई निधि निरु वई निः
स्वाहा ॥ मा गामन्त्रः ॥ ॐ हं वजी हं दृष्ट ॥ ॐ मा ह व जि हं दृष्ट ॥
ॐ यि शुन व जि हं दृष्ट ॥ ॐ गाम व जि हं दृष्ट ॥ ॐ ष्वा व जि हं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नमः शिवाय नमः कृष्णाय नमः
कृतं त्रिसङ्ख्यं मन्त्राणां विनाशिनम्
यस्मात्प्राप्तं सारं तद्वन्द्यं तदात्मकम्
तद्ब्रह्म तदात्मकं तदात्मिकं तदात्मिकात्मिकं

२ उं नमो श्रीदशकाय ॥ उं नमो ब्रह्मकाय ॥ उं नमो ज्ञानकाय ॥
नमः ॥ उं वज्रकाय ॥ उं हृत्कारिकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
उं ज्ञानकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
मः ॥ समस्तकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
मक ॥ सिद्धलया ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥

दृष्टसत्त्वयाद्यहनिधमहाविघ्नयागकविकृतानानः सर्वहृतयक
जुहुटहासनादिनव्याद्युचमनिधसमः कृपूरसर्वकर्मनिमः किं दुः
यत्रयुयूक्ता न सर्वमेतु हिन्दयत्रमूडाः आकर्षय रसाग्रहावा न सर्व
कुतान्मथ रनिर्मथ सर्वरूपा न ॥ पुठेद्यय रममाहि स्नानमधुले मध्व
वेवन्धनजाम्बिगान्को नृकृपूरममकार्यन्द ह २ यत्र २ सर्वयायान्मा

[illegible]

वसत्वानां वाधय वाधय ॥ सभाधयः ॥ सुम २ संकुमय २ सर्ववृद्ध वाधनि
॥ कूट २ संकूटय २ सर्वभा ॥ कूट २ सुकूटय २ सर्वविषयवज कूटय २
वजवज कूटय वजमट वजमथ वजन था रु स नील वज सुवजा य
स्वाहा ॥ ॐ यस्तु न क क हं रुट ॥ ॐ वज काध हं क न हं ग ऊ ग ऊ हं रुट
॥ ॐ नमस्तु न काय वा क विरु व जानः न मा वज का दाय ॥ ॐ हं

ॐ नमाट किं वा जाय ॥ ॐ वज काध रु य व हं हं नू रु न हं रुट ॥ ॐ
ट किं वा ज हं रुट ॥ सु वा रु दी य हं हं रुट ॥ ॐ ग ऊ ग ऊ रु स य या
ना ल न गु ज ग स य यौ वा न न ऊ य २ हं हं रुट रुट स्वाहा ॥
ॐ निट किं वा ज रु रु द य ॥ १ ॥ ॐ नमा प्र ल रु या य ॥ ॐ नमा
ॐ नील रु द य ॥ ॐ नील रु रु रुट ॥ ॐ विनि २ वज स त्व हं हं रुट

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सर्वार्थसाधनी स्वाहा अक
ट आ क ट व ऊ रु ड हूं हूं रू रू रू रू स्वाहा ॥ १ ॥ गं नि नी ल द धु स्य ह
द य ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमः ३ श्री वच क वमी हूं ॥ म
म सर्व सत्त्वानां कृष्णानि युष्टिं कृत्वा हा ॥ ॐ वज्र का ध अ म न कृ ठ
लिहूं शिन्दे शिन्दे हूं हूं रू रू रू रू स्वाहा ॥ १ ॥ गं ति उ श्री वच क वति

यदुट्॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्र उक्थयदुट्॥ वज्र उक्थयदुट्॥
सर्वकर्मसु यतिहृत्तायदुट्॥ वज्र कुलसंज्ञासुनकत्रायदुट्॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
हं हं दू दू दू दू स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो
भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
धनमावज्जुको धायमहादृष्टकटरो नवायश्रुसिम्भालयनमुयोऽ

हस्ताय॥ॐ अमृगकृष्णलीमववयाहि २ किं सु २ च २ ह न २ द ह २ ग ऊ
विस्फुटय २ सर्व विघ्न विनायक नमो रागाय निजी विना नको नायः
स्वाहा॥ॐ विघ्नान्क कर्हं रुट्॥ॐ वज्रकाधर्षला क विजय हं लिङ्ग हं
रुट्॥ॐ निविघ्नान्क कस्य रुदय ॥ ४ ॥ॐ नमो प्रलुपयाय॥ॐ न
मो महावनाय॥ॐ सप्त सप्त विमल रु नमो महावना हं॥ॐ महावना हं

रुट्॥ॐ वज्रकाध महावना हं रुट् २ हं हं हं रुट् रुट् रुट् स्वाहा॥ॐ
धन २ धिनि २ धन २ सर्व वज्र कल आवर्तय स्वाहा॥ अमृक मात्रय रुट्॥
ॐ नमः समक वज्र धा सर्व वल आवर्तय महावना कटवः कल अलम
छुल माय अ निवज महावना विगन धा अर्जि न॥ॐ कल २ टि २ टि २ टि
२॥ गल द ह २ न ऊव नि निलि २ व २ महावना वज्र ऊ क गला लाय स्वा

[illegible][illegible]

मल्लवाः समुद्रमध्यागल्लवाः वदन्त्यागल्लवाः किं ह्यस्यैवमध्यागल्लवाः ज
ज

आशा शरदा

2825

ASHA ARCHIVES



ASHA ARCHIVES

2825

